

शिक्षा संवाद

2021, 8(1-2): 51-58

ISSN: 2348-5558

©2021, संपादक, शिक्षा संवाद, नई दिल्ली

आलेख

कोविड में स्वास्थ्य सेवाएँ: एक आंकलन

दिनेश कुमार

सहायक प्रोफेसर

एसआरआईटीआई

आईपी यूनिवर्सिटी, दिल्ली

सार

कोविड-19 महामारी ने न केवल दुनियाभर के देशों को प्रभावित किया, बल्कि भारत में स्वास्थ्य सेवाओं पर भी जबरदस्त दबाव डाला। मार्च 2020 में महामारी के प्रकोप के बाद से, भारत में स्वास्थ्य सेवाओं को संचालित करने के लिए कई महत्वपूर्ण कदम उठाए गए, लेकिन महामारी की अप्रत्याशित वृद्धि ने कई चुनौतियों को जन्म दिया। अगस्त 2021 तक, भारत ने स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार करने के लिए कई प्रयास किए, लेकिन इस दौरान कुछ बड़ी समस्याएं भी उभर कर सामने आईं इस लेख में हम कोविड-19 के संदर्भ में भारत में स्वास्थ्य सेवाओं की स्थिति का आंकलन करेंगे, और इसके साथ ही सरकार द्वारा उठाए गए कदमों का भी मूल्यांकन करेंगे।

कूटशब्द: महामारी, कोविड, स्वास्थ्य, प्रकोप, सुविधाएं।

कोविड-19 महामारी के दौरान, भारतीय स्वास्थ्य प्रणाली को अभूतपूर्व दबाव का सामना करना पड़ा। देश की स्वास्थ्य सुविधाओं की सीमित क्षमता के बावजूद, अस्पतालों और स्वास्थ्य केंद्रों पर संक्रमित मरीजों की संख्या बढ़ने से पूरी प्रणाली पर भारी असर पड़ा। सबसे बड़ी चुनौती कोविड-19 मरीजों के लिए बिस्तर, वेंटिलेटर, ऑक्सीजन, दवाइयों, और स्वास्थ्यकर्मियों की कमी रही। अगस्त 2021 तक, भारत में कोविड-19 संक्रमण की दूसरी लहर आई, जो कहीं अधिक घातक और तीव्र थी, जिससे अस्पतालों में बिस्तरों की भारी कमी हो गई। कई राज्य, जैसे महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश, दिल्ली, और केरल, में कोविड-19 के मरीजों की संख्या एक साथ बढ़ी, जिससे स्वास्थ्य सेवाओं पर अधिक दबाव पड़ा।

अवसंरचना का विस्तार

शिक्षा संवाद

जनवरी-दिसम्बर, 2021

संयुक्त अंक

सरकार ने कोविड-19 के इलाज के लिए स्वास्थ्य अवसंरचना में सुधार करने के कई कदम उठाएः

- **कोविड-19 के उपचार के लिए अस्पतालों का विस्तारः** सरकार ने देशभर में विशेष कोविड-19 अस्पतालों की स्थापना की और कई सामान्य अस्पतालों को कोविड-19 उपचार के लिए समर्पित किया।
- **मेडिकल सुविधाओं में सुधारः** कई राज्यों में अस्पतालों को आवश्यक मेडिकल उपकरणों जैसे वेंटिलेटर, ऑक्सीजन सांद्रक, और दवाइयों से सुसज्जित किया गया।
- **कोविड-19 सेंटर और कोल्ड चेनः** सरकार ने कोविड-19 के उपचार, परीक्षण, और टीकाकरण के लिए व्यापक कोल्ड चेन नेटवर्क और सेंटर स्थापित किए।

ऑक्सीजन और दवाइयों की आपूर्ति

कोविड-19 के गंभीर मामलों के इलाज में सबसे महत्वपूर्ण संसाधन ऑक्सीजन था। अप्रैल-मई 2021 में जब संक्रमण की दूसरी लहर आई, तो देशभर में ऑक्सीजन की गंभीर कमी हो गई थी। इस संकट से निपटने के लिए, भारत सरकार ने तत्काल ऑक्सीजन आपूर्ति को बढ़ावा देने के लिए कई कदम उठाएः

- **ऑक्सीजन की आपूर्ति में सुधारः** सरकार ने उद्योगों और अन्य क्षेत्रों से ऑक्सीजन की आपूर्ति में बढ़ोतरी की और विभिन्न राज्यों को प्राथमिकता के आधार पर ऑक्सीजन मुहैया कराई।
- **मेडिकल आपूर्ति के लिए अंतर्राष्ट्रीय सहयोगः** भारत सरकार ने वैश्विक स्तर पर सहयोग की अपील की, और कई देशों से मेडिकल आपूर्ति जैसे ऑक्सीजन कंसंट्रेटर्स, वेंटिलेटर, और कोविड-19 दवाइयाँ प्राप्त की।

टीकाकरण अभियान

कोविड-19 के खिलाफ सबसे महत्वपूर्ण उपायों में से एक था टीकाकरण अभियान। अगस्त 2021 तक, भारत में कोविड-19 टीकाकरण अभियान तेज़ी से चल रहा था, और सरकार ने इसे प्राथमिकता दी:

- **टीकों की आपूर्ति और वितरण:** भारत सरकार ने कोवैक्सीन और कोविशील्ड जैसे स्वदेशी टीकों के साथसाथ अन्य अंतर्राष्ट्रीय टीकों का आयात भी किया। शुरुआत में - स्वास्थ्यकर्मियों और फ्रेंटलाइनवर्कर्स को टीका लगाया गया, उसके बाद बुजुर्गों और उच्च जोखिम वाले समूहों को प्राथमिकता दी गई।
- **टीकाकरण केंद्रों का नेटवर्क:** देशभर में टीकाकरण के लिए लाखों टीकाकरण केंद्र खोले गए। सरकार ने ऑनलाइन पंजीकरण प्रणाली शुरू की, जिससे नागरिक आसानी से टीका लगवा सकते थे।
- **टीकाकरण की गति:** अगस्त 2021 तक, भारत ने 50 करोड़ से अधिक कोविड-19 टीकों की खुराकें दी थीं, जो दुनिया के सबसे बड़े टीकाकरण अभियानों में से एक था।

स्वास्थ्यकर्मियों की कमी

कोविड-19 महामारी के दौरान स्वास्थ्यकर्मियों की कमी एक महत्वपूर्ण चुनौती थी। अस्पतालों में कार्यरत डॉक्टरों, नर्सों, और अन्य स्वास्थ्यकर्मियों पर भारी दबाव था। कोविड-19 से संक्रमित स्वास्थ्यकर्मियों की संख्या भी बढ़ी, जिसके कारण उनके लिए काम करने की परिस्थितियाँ और कठिन हो गईं। इसके समाधान के लिए, सरकार ने:

- **स्वास्थ्यकर्मियों के लिए अतिरिक्त राहत पैकेज:** डॉक्टरों और स्वास्थ्यकर्मियों के लिए सरकार ने विशेष बीमा योजनाएं शुरू की और उन्हें अतिरिक्त सुरक्षा प्रदान करने की कोशिश की।
- **स्वास्थ्यकर्मियों की भर्ती:** विशेष रूप से कोविड-19 महामारी के दौरान, सरकार ने अस्थायी तौर पर डॉक्टरों, नर्सों और अन्य स्वास्थ्यकर्मियों की भर्ती की और उनका प्रशिक्षण सुनिश्चित किया।

टेस्टिंग और ट्रैकिंग

कोविड-19 के प्रसार को नियंत्रित करने के लिए टेस्टिंग और ट्रैकिंग एक महत्वपूर्ण कदम था:

- **आरटीपीसीआर टेस्टिंग-**: सरकार ने कोविड-19 के लिए टेस्टिंग क्षमता को बढ़ाया और राज्यों में परीक्षण सुविधाओं का विस्तार किया। भारत में अगस्त 2021 तक करोड़ों कोविड-19 टेस्ट किए गए थे।
- **एप्स और डिजिटल प्लेटफॉर्म-**: सरकार ने आरोग्य सेतु ऐप और कोविड-19 डेटा ट्रैकिंग जैसी डिजिटल सेवाओं का संचालन किया, जिससे लोगों को कोविड-19 के बारे में जानकारी मिलती रही और उन्हें सुरक्षा उपायों का पालन करने के लिए प्रेरित किया गया।

स्वास्थ्य के बुनियादी ढांचे में सुधार

कोविड-19 के दौरान स्वास्थ्य सेवा में सुधार के लिए सरकार ने कई दीर्घकालिक उपायों पर भी विचार किया:

- **राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन (NHM)**: सरकार ने एनएचएम के तहत स्वास्थ्य सेवाओं को प्रोत्साहन दिया और बुनियादी स्वास्थ्य सेवाओं के स्तर को बढ़ाया।
- **अस्पतालों और चिकित्सा उपकरणों का विस्तार-**: कोविड-19 के बाद, स्वास्थ्य ढांचे में स्थायी सुधार की आवश्यकता को महसूस किया गया और अस्पतालों और चिकित्सा उपकरणों की संख्या बढ़ाई गई। अगस्त 2021 तक, भारत में स्वास्थ्य सेवाओं का स्तर सुधारने के लिए सरकार द्वारा कई उपाय किए गए, लेकिन कोविड-19 के सामने यह चुनौती बहुत बड़ी थी। अस्पतालों में बिस्तरों की कमी, ऑक्सीजन की आपूर्ति, और स्वास्थ्यकर्मियों की कमी जैसी समस्याओं का समाधान केवल समयसमय पर उठाए गए तात्कालिक कदमों - से नहीं हो सकता था। हालांकि, टीकाकरण अभियान और स्वास्थ्य अवसंरचना के सुधार से भविष्य में इस तरह के संकट से निपटने में मदद मिल सकती है।

स्वास्थ्य में डॉक्टरों की भूमिका

कोविड-19 महामारी ने न केवल स्वास्थ्य सेवाओं के ढांचे को चुनौती दी, बल्कि डॉक्टरों और अन्य स्वास्थ्य कर्मियों के लिए भी यह अभूतपूर्व संकट था। इस महामारी के दौरान डॉक्टरों ने अपनी न केवल पेशेवर जिम्मेदारी निभाई, बल्कि मानवीय दृष्टिकोण से भी अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनका काम केवल मरीजों का इलाज करना ही नहीं था, बल्कि वे संकट की घड़ी में एक मार्गदर्शक, सहायक और आशा की किरण बने। यहां कोविड-19 महामारी के दौरान डॉक्टरों की भूमिका के कुछ मुख्य पहलुओं का विवरण किया गया है:

मरीजों का निदान और उपचार

कोविड-19 के प्रसार के साथ, डॉक्टरों ने संक्रमित मरीजों का निदान किया और उन्हें उपचार देने का कार्य किया। चूंकि कोविड-19 एक नई बीमारी थी, जिससे संबंधित जानकारी पहले से नहीं थी, डॉक्टरों को समय-समय पर नए इलाज और उपचार प्रोटोकॉल के बारे में सीखना और अपनाना पड़ा। यह एक बड़ी चुनौती थी, क्योंकि महामारी के दौरान लगातार नए-नए शोध और दिशा-निर्देश सामने आ रहे थे।

- आरटीपीसीआर टेस्टिंग:- डॉक्टरों ने संक्रमित व्यक्तियों का परीक्षण किया और निदान के आधार पर उपचार प्रक्रिया शुरू की।
- ऑक्सीजन सपोर्ट:- गंभीर मामलों में, डॉक्टरों ने ऑक्सीजन सपोर्ट, वेंटिलेटर का इस्तेमाल, और अन्य जीवन रक्षक उपायों का सहारा लिया।

रोगियों की देखभाल और मानसिक समर्थन

कोविड-19 के दौरान, अस्पतालों में भर्ती होने वाले मरीजों को शारीरिक रूप से और मानसिक रूप से भी बहुत कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। डॉक्टरों ने न केवल शारीरिक उपचार किया, बल्कि मानसिक रूप से भी उन्हें सहारा दिया। कई मरीजों को डर, अकेलापन शिक्षा संवाद

और घबराहट का सामना करना पड़ा, खासकर जब उनके परिवारजनों से मिलने की अनुमति नहीं थी।

- **मनोवैज्ञानिक समर्थन:** डॉक्टरों ने मानसिक स्वास्थ्य पर भी ध्यान दिया और मरीजों को सांत्वना देने, उनके डर को कम करने और उत्साहवर्धन करने के लिए लगातार संवाद बनाए रखा।
- **परिवारों के साथ संवाद:** डॉक्टरों ने मरीजों के परिवारों से नियमित रूप से संपर्क किया, ताकि उन्हें उपचार की प्रक्रिया और मरीज की स्थिति के बारे में अपडेट किया जा सके।

3. स्वास्थ्यकर्मियों की नेतृत्व भूमिका

कोविड-19 के संकट के दौरान, डॉक्टरों ने स्वास्थ्यकर्मियों की पूरी टीम का नेतृत्व किया। वे केवल इलाज नहीं कर रहे थे, बल्कि अस्पतालों और स्वास्थ्य केंद्रों के संचालन के लिए रणनीति बनाने, स्वास्थ्य कर्मचारियों को प्रशिक्षित करने और समन्वय स्थापित करने का काम भी कर रहे थे।

- **टीम का नेतृत्व:** डॉक्टरों ने नर्सों, फार्मासिस्टों, और अन्य स्वास्थ्यकर्मियों को संकट के समय में नेतृत्व प्रदान किया और अस्पतालों में कार्यों के समुचित प्रबंधन को सुनिश्चित किया।
- **संक्रमण नियंत्रण:** डॉक्टरों ने अस्पतालों में संक्रमण को फैलने से रोकने के लिए आवश्यक एहतियात बरती, जैसे पर्सनल प्रोटेक्टिव इकिवपर्मेंट (PPE) का सही उपयोग, मरीजों से संपर्क सीमित करना, और संक्रमण नियंत्रण के उपायों का पालन करना।

टीकाकरण अभियान में भागीदारी

अगस्त 2021 तक, भारत सरकार ने कोविड-19 के खिलाफ व्यापक टीकाकरण अभियान शुरू किया। इस अभियान में डॉक्टरों ने सक्रिय रूप से भाग लिया और टीकाकरण के लिए लोगों को जागरूक किया।

- **टीकाकरण केंद्रों में योगदान:** डॉक्टरों ने टीकाकरण केंद्रों पर जाकर टीके लगाने का कार्य किया और सुनिश्चित किया कि योग्य लोग समय पर टीका प्राप्त करें।
- **जन जागरूकता:** डॉक्टरों ने जनता को कोविड-19 के टीके के महत्व के बारे में बताया और यह भी सुनिश्चित किया कि लोग अफवाहों से बचें और टीकाकरण करवाएं।

नए उपचार और प्रोटोकॉल का पालन

कोविड-19 महामारी के दौरान, डॉक्टरों को नए उपचार प्रोटोकॉल और दवाओं के बारे में सीखने और उन्हें लागू करने की आवश्यकता थी।

- नई दवाओं का परीक्षण:** महामारी के दौरान डॉक्टरों ने नई दवाओं और उपचार विधियों को आजमाया और देखा कि कौन सी दवाएं संक्रमित मरीजों के लिए प्रभावी हैं।
- अंतर्राष्ट्रीय शोध में भागीदारी:** डॉक्टरों ने शोधकर्ता और वैज्ञानिकों के साथ मिलकर नई जानकारी और उपचार प्रोटोकॉल पर काम किया, जिससे वैश्विक स्तर पर कोविड-19 के इलाज की रणनीतियों में सुधार हुआ।

स्वास्थ्य के प्रति जन जागरूकता बढ़ाना

महामारी के दौरान, डॉक्टरों ने न केवल मरीजों का इलाज किया, बल्कि पूरे समाज में कोविड-19 के प्रसार को रोकने के लिए जागरूकता फैलाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

- स्वच्छता और सुरक्षित दूरी:** डॉक्टरों ने लोगों को सोशल डिस्टेंसिंग, मास्क पहनने, और हाथ धोने के महत्व के बारे में शिक्षित किया।
- स्वास्थ्य संबंधी गाइडलाइन्स:** डॉक्टरों ने सरकारी गाइडलाइन्स का पालन करने की अपील की, जिससे लोग सुरक्षित रह सकें और वायरस के प्रसार को रोका जा सके।

संकट के दौरान व्यक्तिगत बलिदान

कोविड-19 के दौरान, डॉक्टरों ने अपनी जान की परवाह किए बिना मरीजों की देखभाल की। उन्हें अत्यधिक दबाव का सामना करना पड़ा, कई बार उन्हें अपने परिवार से भी दूरी बनानी पड़ी। डॉक्टरों ने अपनी जिम्मेदारी निभाने में एक मानवतावादी दृष्टिकोण को अपनाया और कई स्वास्थ्यकर्मी इस महामारी के दौरान संक्रमित भी हुए, लेकिन फिर भी वे अपने कर्तव्यों से पीछे नहीं हटे।

निष्कर्ष

कोविड-19 महामारी के दौरान, डॉक्टरों ने एक सशक्त और निर्णायक भूमिका निभाई। उनके बिना, महामारी का मुकाबला करना असंभव होता। उनके उपचार, मानसिक समर्थन, नेतृत्व, और जागरूकता अभियान ने समाज को महामारी से निपटने के लिए तैयार किया। डॉक्टरों ने न केवल अपने पेशेवर कर्तव्यों का पालन किया, बल्कि उन्होंने मानवता की सेवा में भी अद्वितीय उदाहरण प्रस्तुत किया। कोविड-19 महामारी ने यह सिद्ध कर दिया कि डॉक्टर समाज के लिए एक अनमोल धरोहर हैं, और उनके योगदान को कभी भुलाया नहीं जा सकता।

संदर्भ

- **World Health Organization (WHO).** (2020). *The Role of Health Workers in the Response to the COVID-19 Pandemic.* World Health Organization. Retrieved from: <https://www.who.int>
- **Government of India, Ministry of Health and Family Welfare.** (2021). *COVID-19 Management Guidelines.* Government of India. Retrieved from: <https://www.mohfw.gov.in>
- **The Lancet.** (2020). *COVID-19: Protecting Health Care Workers.* The Lancet, 395(10228), 1587-1588. DOI: 10.1016/S0140-6736(20)30644-2.
- **Indian Medical Association (IMA).** (2021). *Role of Doctors in Combating COVID-19.* IMA. Retrieved from: <https://www.ima-india.org>
- **Maharashtra Medical Council.** (2020). *Medical Professionals in the COVID-19 Response.* Maharashtra Medical Council. Retrieved from: <https://www.maharashtramedicalcouncil.in>